शिक्षा अपने सम्पूर्ण अर्थों में

*डॉ. मणिमाला शर्मा

Education is the knowledge of how to use the whole of oneself यानि शिक्षा वह ज्ञान है जो यह बताता है कि अपने सम्पूर्ण व्यक्त्विका उपयोग किस प्रकार किया जाए।

इसी तरह Education is not received but it is achieved यानि शिक्षा प्राप्त नही होती बल्कि उसे प्राप्त करना पड़ता है।

शिक्षा अपने सम्पूर्ण अर्थ में तभी सार्थकता पाती है जब उसे पूर्णता उपलब्ध हो तथा पूर्ण प्रदर्शन का अवसर भी उपलब्ध हो शिक्षा व शिक्षक का तो चोली दामना का साथ है। बिना शिक्षक शिक्षा मिलना नितांत असम्भव है और शिक्षति इति शिक्षक यानि शिक्षा देने वाले को ही शिक्षक कहा जा सकता है।

प्राचीन काल में गुरू शिक्षा देने का काम करते थे इसलिए गुरू व गोविन्द में भी गुरू को की महति पदवी प्राप्त थी सच ही है कि

''सदगुरू ऐसा चाहिए जैसा लोटा डोर,
गला फंसावे आपनो, लावे नीर झकोर''

यानि सद्गुरू तो उस लौटे की तरह होता है जो अपने गले में रस्सी डाल कर भी यानि स्वयं अगिणत दुःख/कष्ट सहकर भी शिष्य की अज्ञानता नष्ट कर उसमें ज्ञान रूपी सोते को फूटाता है।

शिक्षा का अर्थ मात्र किताबी या तकनीकी ज्ञान ही नहीं है। यह शिक्षा तो अर्थोपार्जन का जरिया है। जब कि वास्तविक शिक्षा वो है जो हमें परिवार, समाज, देश, विदेश, विश्व के लिए जीना सीखाती है। जिसे पाकर न सिर्फ उसे पाने वाला धन्य होता है। अपितु वो उस पारस के समान अमूल्य हो जाती है कि उसके सम्पर्क में आने वाले अज्ञानी को भी शिक्षित करने से नही चुकती सच्चे अर्थो में शिक्षा तभी शोभापाती है। जब उसे आचरण में (In conduct) ढाला जाये।

शिक्षा वो शक्ति है जिस्से व्यक्ति अपने को जानना सीखता है। क्योंकि There is nio treasure like knowledge इसलिए प्रत्येक से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए चाहे वो बालक ही हो।

एक शिक्षक अपनी अन्नत कालीन छाप अपने शिष्यों पर डालता है। क्यो कि वह स्वयं भी नही बता सकता है। कि उसका प्रभाव कहाँ और कब रूकेगा।

Henry Adams ds 'kCnks esa
A teacher affects eternally
he can never tell where his
influence stops.

सच्चा शिक्षक अपना मत लादता नहीं है। अपितु जिज्ञासा जागृत करता है। किसी ने सच ही कहा है।

''गुरू विरह – चिनगी सो मेला।

जो सुलगाइ लेइ सो चेला।''

प्राचीन भारत भी गवाह है कि गुरू शिष्य पंरपरा कितनी पवित्रता, उच्चता, श्रेष्ठता, लिए थी। लेकिन आज के युग में आते – आते न तो वो द्रोणाचार्य रहे तथा न ही वो गुरूभक्त एकलव्य। समाज तरस रहा है। राम लक्ष्मण जैसे शिष्यो तथा वशिष्ठ जैसे गुरूओं के लिए, वो तरस रहा है संदीपन जैसे गुरूओं के लिए जिन्हे पाकर कृष्णा व सुदामा धन्य हो गए।

आज के शिक्षकों ने अपनी छवि को इतना धुमिल कर दिया है कि राधा कृष्णन जैसे सच्चे गुरूओं को मात्र 5 सितम्बर को चन्द लम्हे याद कर आज का शिक्षाजगत स्वयं को कृत कृत्य मान रहा है शिक्षा की हालत देखकर तो विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती भी लुक छीप सी रही हैं।

शिक्षा की डिग्रीयाँ भी अमीरो की तिजोरियों के जोर के आगे स्वयं को लुटता महसुस कर रही है। भारतीय शिक्षा परम्परा में यह कही भी नहीं था की रूपये वाले/अमीरों की सन्ताने अपनी सम्पति के जोर से शिक्षा हासिल कर ले वही मात्र सरस्वती का दामन थामें व्यक्ति को अयोग्यता इस लिए मिले की लक्ष्मी ने उसका दामन थामें होना चाहिए।

आज लड़ाई शिक्षा की नहीं रही लड़ाई विद्या अधिष्ठात्री देवी सरस्वती व महालक्ष्मी के बीच है। और अग्नि परीक्षा देना पड रही है। आम आदमी की सीता यानि शिक्षा को।

आज की सवेंदना शून्य शिक्षा ने व्यक्ति को इतना संवेदनहीन बन दिया है कि सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति की और देखने तक का वक्त भी उसके पास नहीं है। हमारी भारतीय संस्कृति में यह शिक्षा तो कदापि अपेक्षीत नहीं रही। शिक्षा तो व्यक्तित्व का चहुमुखी विकास करने वाली है। और उसी से व्यक्तित्व का दमन होना प्रारम्भ हो जाए तो इस से आपत्तिजनक स्थिती असंभव है।

शिक्षा ऐसी हो जो व्यक्ति को संस्कारवान, चरित्रवान बनाए ताकि अन्य लोगो को भी इन गुणो का लाभ मिले शिक्षा पाकर व्यक्ति अपना ही नही अपितु आने वाले कही युगो तक अपने राष्ट्र का भी नाम अन्तराष्ट्रीय मंच पर याद रख सके।

शिक्षा का सीधा सीधा अर्थ है सीखना सीख हमें कोई भी दे सकता है। एक अशिक्षित (असाक्षर) व्यक्ति से भी बहुत कुछ सिखा जा सकता है। शिक्षा कभी नहीं कहती है कि अपने से छोटे से मत सिखो अपितु हर व्यक्ति को अपने जीवन में यह द्वाररूपी Option सदैव खुला रखना ही चाहिए।

सही मायने में परिस्थतियाँ व अनुभव हमारे दो सच्चे शिक्षक होते है। इन से मिली सीख अपनी अमिट छाप जिन्दगी कि स्लेट पर छोड़ जाती है।

सीखने के लिए समय की जरूरत ही नही होती बल्कि हर समय, स्वयं हमें कुछ न कुछ सीखा ही जाता है। हर गलती हमें कुछ न कुछ अवश्य ही सीख दे जाती है। परन्तु हमारी जिन्दगी इतनी लम्बी भी नहीं कि हर गलती खुद करके सीखे। अतः अनुभवों का सहारा लेकर सीख लेनी चाहिए।

अगर हम स्वयं अच्छे विचारक नहीं है तो क्या हुआ हम सदैव स्वयं को Good Thinkers ls Attach तो रख ही

सकते है। उनके अनुभवो की छाया में ही हम अपनी जिन्दगी रूपी लता को बचाये रख सकते है।

अशिक्षा पर शिक्षा का प्रथम आक्रमण बहुत महत्वपूर्ण होता है। यही वो घड़ी होती है। जहा से शिक्षा की नैया को खवैया मिलजाता है। यह शिक्षा की प्रथम किरण ही अशिक्षा के सम्पूर्ण तिमिर का नाश करने की शक्ति लिए प्रज्जवलित मशाल होती है। परिवार तो शिक्षक को अपने नन्हे अरमान सोपकर निश्चित हो जाता है। अब शिक्षक को चाहिए की वो कुम्हार की तरह बाहर से चोट भले ही दर्शन लेकिन भीतर हाथ का सहारा देकर उसमें सुन्दर कृति उभार दे ताकि उसकी उस कृति पर विश्व मंच आश्चर्य कर सके क्यों कि।

'गुरू कुम्हार शिष्य कुम्भ है

गढि गढि काढे खोट

भीतर धरी हाथ बाहर बाहे चोट'

आज भारत को फिर द्रोणाचार्य, संदीपन ऋषि, वशिष्ठ, डॉ. राधा कृष्णन जैसे शिक्षकों की आवश्यकता है। जो भरतीय गुरू शिष्य परमपरा को लज्जित होने से बचाकर उसी श्रेष्ठ मुकाम पर पुनः स्थापित कर सके।

शिक्षा के सम्बन्ध में गांधी के विचार बहुत महत्वपूर्ण है। गांधी जी का मानना है कि हर व्यक्ति में एक अनिवार्य शुभत्व का वास होता है, उस शुभत्व को जागृत करने के लिए उपयुक्त शिक्षा प्रदान करना राज्य का कर्त्तव्य है। गांधी के अनुसार शिक्षा का मुल लक्ष्य नैतिक, शिक्ष है, चरित्र निर्माण है।

गांधी जी 'हरिजन में कहते है– ''शिक्षा का अर्थ है व्यक्ति के शरीक, मन, आत्म में जो शुभत्व है उसे प्रकट करने का प्रयत्न – उसे विकासित करने का प्रयत्न।'' अर्थात् शिक्षा द्वारा सर्वागीं विकास होता है। शिक्षा का अर्थ वैचारिक और बौद्धिक विकास के साथ 'आत्म' का विकास होना चाहिये। अर्थात् आध्यात्मिक शिक्षा भी शिक्षा का एक अनिवार्य पक्ष है। हर व्यक्ति कुछ मूल प्रकृतियो और शक्तियों के साथ पैदा होना है, शिक्षा का लक्ष्य हर व्यक्ति में इन शक्तियो को उभरना है– उसे विकसित करना है। गांधी सैद्धान्तिक जानकारी के साथ व्यवहारिक क्षमता को बढ़ाने वाली शिक्षा को भी महत्व देते थे। 'कर के सीरवो' के महत्व को स्वीकारते हुए गांधी कुछ कार्य कुशलता सीखने से ही व्यक्ति शारीरिक कम की महत्वा को समझेगा और व्यक्ति की आन्तरिकता का विकास होगा। इसीलिए बुनियादी शिक्षा में बच्चे 'कम्के' कार्यकुशलता प्राप्त कर लेने है। साथ ही, सीखने के क्रम में ही व्यक्ति सीख की व्यवहारिक उपयोगिता को भी समझ लेता है। गांधी आज की उच्च शिक्षा से तो स्पष्टतः असन्तुष्ट थे। गांधी का कहना था कि जिस प्रकार के पेशे में व्यक्ति जाना चाहता है, उसी कार्य को केन्द बनाकर उसके शरीर, मन और आत्म का विकास होना चाहिये, जिससे व्यक्ति में आध्यात्मिक शक्ति और कार्य करने की क्षमता भी बढ़े।

ऐसी शिक्षा के द्वारा एक शांत सामाजिक क्रान्ति का आधार बन जाता है। ग्रामीण और शहरी जीवन को निकट ले आता है। जिससे ग्रामीण संस्कृति भी नष्ट होने से बच जाती है और शहरी जीवन का आकर्षण कम हो जाता है। शिक्षित व्यक्ति अपने शिल्प का पूर्णारूप से जानकार होता है।

***सहायक आचार्य दर्शन शास्त्र**
चौ.ब.रा.गौ राजकीय कन्या महाविद्यालय
श्री गंगानगर (राज.)